ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 580-583

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

ग्रामीण परिवेश में कार्यरत तथा गैर–कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकत्नात्मक अध्ययन

डॉ0 अजीता रानी

एसोसिएट प्रोफेसर– मनोविज्ञान विभाग, राजकीय रज़ा स्नामकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 03.08.2020,Revised- 08.08.2020, Accepted-11.08.2020 E-mail: - ajitarani1@gmail.com

सारांश : ***नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः। नास्ति मातृसमं त्राणं, नास्ति मातृसमा प्रपा।। माता के समान छाया नहीं है और न ही माता के समान कोई गति है, माता के समान कोई रक्षक नहीं है और न ही माता के समान कोई प्रिय है। मॉ बच्चे को बोलना, खाना–पीना, चलना–फिरना आदि सिखाती है, इसलिए मॉ हर मनुष्य की प्रथम गुरू होती है। इक्कीसवीं सदी की नारी आधुनिक नारी है। वह आत्मनिर्भर नारी है वह परिवार की आर्थिक स्थिति में वृद्धि कर रही है और घर की चाहरदीवारी से निकलकर आत्मनिर्भर नारी बन रही है, ताकि वह परिवार में निर्णय ले सके और नारी सशक्तीकरण के सपने साकार हो सके।***

कुंजीभूत शब्द– आत्मनिर्भर, चाहरदीवारी, सशक्तीकरण, राष्ट्रीयप्रगति, आर्थिक उन्नति, भारतीय संस्कृति।

शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। ज्ञान एवं कौशल से व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है तथा अपने भौतिक सामाजिक पर्यावरण को उन्नत बनाता है साथ ही साथ अपने अधिकारों के प्रति सजग रहते हुए कर्तव्यों का पालन करता है। व्यक्तिगत, सामाजिक व राष्ट्रीय प्रगति तथा आर्थिक उन्नति में शिक्षा का सार्थक योगदान सदैव रहा है।

भारतीय संस्कृति में स्त्री को सदैव सम्मानजनक स्थान रहा है, प्रकृति स्वरूपा नारी को देवी, जननी या सहचरी कहकर पुकारा जाता था फिर भी सदियों तक विद्या की देवी की आराधना करने से उसे विमुख रखा गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि मध्यकालीन समाज में स्त्रियों को अज्ञानता के आवरण में रखकर पिता, पति या पुत्र के दासत्व को स्वीकार करने के कर्तव्य का ज्ञान देने मात्र को ही स्त्री शिक्षा की इतिश्री मान लिया जाता था। परन्तु आज इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में ही परिस्थितियॉ बदल गयी है। आज की नारी शिक्षा प्राप्त करके आधुनिक नारी हो गयी है।

राष्ट्र के विकास में पुरूषों से कंधा से कंधा मिलाकर चल रही है और कृषि कार्य से लेकर अंतरिक्ष तक अपनी कामयाबी के झण्डे बुलंद कर रही है अब वे हवाई जहाज से लेकर लड़ाकू विमान उड़ा रही है और प्रशासनिक निर्णयों में भी दखल दे रही हैं, अब वे घर की चाहरदीवारी में ही कैद होकर नहीं रह रही है बल्कि अज्ञानता के वातावरण से बाहर निकल जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों से स्पर्धा कर रही हैं। इक्कीसवीं सदी की नारी आत्मनिर्भर नारी हैं, अब वे गृहस्थी के साथ–साथ नौकरी कर रही हैं। प्राथमिक स्तर पर बच्चों को मॉ की सर्वाधिक जरूरत होती है अब वे बच्चों को मॉ की तरह ही नहीं बल्कि वे पिता की तरह भी देखभाल कर रही है। स्त्री चाहे कहीं भी नौकरी कर रही है अपने बच्चे की देखभाल करने के लिए समय निकाल ही लेती हैं क्योंकि उसे पता है कि, यही बालक अब उसके आगे के लिए सहारा बनेंगे। आज की नारी अपने प्राप्त ज्ञान से अपने बालक को पोषण युक्त आहार, उचित खान–पान, परिवेश और शिक्षा द्वारा बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास पर ध्यान दे रही है।

जिस परिवार में शिक्षित महिलायें हैं वह परिवार अन्य परिवारों की अपेक्षा ज्यादा विकास कर रहा है। मॉ बालक की प्रथम शिक्षिका है, बच्चे के पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा में मॉ की अतुलनीय भूमिका है। बालक अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मॉ पर ही निर्भर रहता है इस स्थिति में मॉ का कार्यरत होना तथा गैर कार्यरत होना बच्चों को प्रभावित करता है। जब स्त्रियॉ कार्यरत होती हैं तो वे आर्थिक रूप से स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर होती हैं परन्तु समयाभाव के कारण बच्चे की अधिकतम कठिनाइयों को दूर करने में समर्थ नहीं हो पाती हैं, जबकि गैर कार्यरत महिलायें अपना अधिकतम समय बच्चों के साथ ही गुजारती हैं जिससे बच्चे का भावनात्मक लगाव मॉ पर अधिक रहता है इस स्थिति में गैर कार्यरत महिलायें अपने बालकों को शैक्षिक, मानसिक, शारीरिक, नैतिक, चारित्रिक और अधिगम सम्बन्धी कठिनाईयों को दूर करने में समर्थ रहती है। अतः बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर मॉ के कार्यरत तथा गैर कार्यरत होने का प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव धनात्मक और ऋणात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है।

प्रस्तुत सर्वे प्रकार के शोध अध्ययन में कुछ महत्वपूर्ण शोध साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ यह देखने का प्रयास किया गया है कि कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों में शैक्षिक उपलब्धि का किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

त्रिवेदी, सुधा (1988):– इन्होंने अपने शोध अध्ययन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

में "कार्यरत तथा गैर कार्यरत माताओं के किशोर बच्चों की विद्वता सम्बन्धी उपलब्धि" में पाया कि कार्यरत तथा गैर कार्यरत माताओं के बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। शिक्षित एवं अशिक्षित माताओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

गुप्ता, ए0 (2002) इन्होंने अपने शोध अध्ययन "कार्यरत तथा गैर कार्यरत शिक्षित महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" में पाया कि कार्यरत शिक्षित महिलाओं की अपेक्षा गैर कार्यरत शिक्षित महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि बहुत अच्छी होती है।

आर0 सरन (2011) इन्होंने पूरब के मानचेस्टर शहर के रूप में जाने वाले औद्योगिक शहर कानपुर में कार्यरत औद्योगिक संगठन एवं गैर औद्योगिक संगठन में कार्यरत महिलाओं पर शोध किए और निम्न निष्कर्ष पाए–

1. कार्यरत महिलाएं 20–35 आयु वर्ग की थी।
2. कार्यरत महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं थी।
3. महिलाओं के रहन–सहन का स्तर संतोषजनक नहीं था।
4. पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं था और बच्चे भी अच्छी शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रहे थे।

वर्तमान शोध की आवश्यकता– आधुनिक भारत में सभी परिवार में पढ़ी लिखी महिलाएं आ रही हैं और वे समाज में अपना एक अलग स्थान बना रही हैं। सम्पूर्ण विश्व और भारत में भी खाद्य वस्तुओं के भाव बढ़ रहे हैं इस बढ़ती महॅगाई के कारण परिवार को चलाना संभव नहीं हो पा रहा है। प्रत्येक परिवार की सोच अब बदल रही है कि उनके घर की महिलायें भी अब घर के आय वृद्धि में योगदान करें और यह योगदान मिल भी रहा है। इस भौतिकवादी युग में प्रत्येक परिवार अधिक से अधिक भौतिक संसाधनों का उपभोग करना चाह रहा है। वह अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे हिन्दी/अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाना चाहता है। इस परिस्थिति में महिलायें अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए घर से बाहर निकलकर कार्यरत होकर अपने परिवार को आर्थिक स्थिति में वृद्धि कर रही है। फलस्वरूप "ग्रामीण परिवेश में कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की गयी।

शोध अध्ययन का उद्देश्य–

1. ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की गणित विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की गणित विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना– शोध परिकल्पना समस्या के विश्लेषण और परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है जिसका अर्थ है पूर्व चिंतन। यह अनुसंधान प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना समस्या का संभावित कथन है जो समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है जिसकी पुष्टि प्रदत्तों के आधार पर होती है।

1. ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की हिन्दी विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की हिन्दी विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की गणित विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की गणित विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

शोध उपकरण– प्रस्तुत शोध में हिन्दी उपलब्धि परीक्षण के लिए डॉ0 आर0डी0 सिंह तथा डॉ0 माधुरी सिंह का परीक्षण प्रपत्र प्रयोग किया गया है। जिसकी विश्वसनीयता स्पीयर ब्राउन फार्मेसी सूत्र की सहायता से 0.80 प्राप्त हुयी है जिसकी वैधता शत प्रतिशत है। गणित उपलब्धि परीक्षण के लिए डॉ0 एल0एन0 दुबे का परीक्षण प्रपत्र प्रयोग किया गया है, जिसकी विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा 0.86 है तथा वैधता 0.61 है।

आंकड़ों का संग्रह– प्रस्तुत शोध अध्ययन इलाहाबाद एवं सतना जिले में स्थित 20 विद्यालयों में किया गया है, जिसका चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। इस सर्वेक्षण में कुल 800 बच्चों का चयन किया गया जिसमें 400 विद्यार्थी कार्यरत शिक्षित महिलाओं एवं 400 गैर कार्यरत शिक्षित महिलाओं के बच्चे सम्मिलित किए गए हैं।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी– शोध अध्ययन को प्रमाणिक बनाने तथा उसकी मौलिकता को परखने के लिए विभिन्न प्रकार की सांख्यिकी विधियों का चयन किया जाता है, जिसके प्रयोग से आंकड़ों की सार्थकता का विश्लेषण किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, प्रामाणिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

विचलन, क्रांतिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना का सत्यापन– परिकल्पना एक– महिलाओं के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की हिन्दी विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी–1

समूह (महिलाओं के अध्ययनरत बच्चे)	संख्या	मध्यमान Mean	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रयांश D.F.	क्रांतिक अनुपात C.R.	सार्थकता स्तर
हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के बच्चे	400	12.45	9.42	798	2.46	.05
अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के बच्चे	400	14.00	8.5			

798 d.f.=0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 1.96

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि परिकल्पना की जॉच के लिए निकाले गये क्रांतिक अनुपात का मान 2.46 है, जो कि 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम मान से अधिक है और सार्थक अंतर है फलस्वरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

उपर्युक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि शिक्षित महिलाओं के हिन्दी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की हिन्दी विषय में उपलब्धि अधिक होती है इसका कारण यह है कि अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चे पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर चुके होते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में शिक्षक हिन्दी माध्यम विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक रूचिपूर्ण एवं प्रभावी ढंग से अध्यापन करते हैं और माता–पिता भी बच्चों की शिक्षा एवं गृहकार्य के प्रति अधिक जागरूक होते हैं।

परिकल्पना दो– कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की हिन्दी विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी–2

समूह	संख्या	मध्यमान Mean	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रयांश D.F.	क्रांतिक अनुपात C.R.	सार्थकता स्तर
कार्यरत महिलाओं के बच्चे	400	13.74	8.42	798	2.68	0.05
गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चे	400	15.30	8.06			

798 d.f.=0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 1.96

सारणी से स्पष्ट है कि क्रांतिक अनुपात का मान 2.68 है, जो कि 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम मान से अधिक है, दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर है फलस्वरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की हिन्दी विषय की उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 13.74 व 15.30 है जिससे स्पष्ट होता है कि कार्यरत महिलाओं के बच्चों की हिन्दी विषय में उपलब्धि अधिक है। इसका प्रमुख कारण है कि कार्यरत महिलाएं अधिक परिश्रम के कारण शारीरिक एवं मानसिक रूप से थकान महसूस करती है और समयाभाव के कारण बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दे पाती हैं जिससे उनके बच्चों में हिन्दी विषय में उपलब्धि में कमी होती है।

परिकल्पना तीन– महिलाओं के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की गणित विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है:–

सारणी–3

समूह (महिलाओं के अध्ययनरत बच्चे)	संख्या	मध्यमान Mean	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रयांश D.F.	क्रांतिक अनुपात C.R.	सार्थकता स्तर
हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के बच्चे	400	15.55	6.62	798	5.58	.05
अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के बच्चे	400	18.15	6.41			

798 d.f. =0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 1.96

उपर्युक्त सारणी से ज्ञात होता है कि क्रांतिक अनुपात का मान 5.58 है, जो .05 विश्वास के स्तर के न्यूनतम मान से अधिक है साथ ही साथ दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर है फलस्वरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत और शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की गणित विषय की उपलब्धि के मध्यमान 15.55 व 18.15 हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि हिन्दी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की गणित विषय में उपलब्धि अधिक होती है इसका एक कारण यह भी है कि अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों के अभिभावक गृहकार्य के प्रति अधिक ध्यान देते हैं और जागरूक होते हैं।

परिकल्पना–चार:– कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की गणित विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी–4

समूह	संख्या	मध्यमान Mean	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रयांश D.F.	क्रांतिक अनुपात C.R.	सार्थकता स्तर
कार्यरत महिलाओं के बच्चे	400	17.40	6.57	798	2.04	0.05
गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चे	400	18.31	6.09			

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

798 d.f.=0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 1.96

सारणी 4 से स्पष्ट होता है कि परिक्लपना की जॉच के लिए क्रांतिक अनुपात का मान 2.04 है, जो कि .05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम मान से अधिक है, जिससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर है फलस्वरूप उपर्युक्त शून्य परिकल्पना स्वीकृत और शोध परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

कार्यरत तथा गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की गणित विषय की उपलब्धि के मध्यमान 17.40 व 18.31 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता से ज्ञात होता है कि कार्यरत एवं गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की गणित विषय की उपलब्धि में सार्थक अन्तर है इसका प्रमुख कारण है कि गणित जैसे विषय के प्रति कार्यरत एवं गैर कार्यरत दोनों प्रकार की महिलाएं अपने बच्चों के प्रति जिम्मेदार है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन की छोटी से छोटी आवश्यकताओं को हल करने के लिए गणित के ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्त ऑकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कार्यरत एवं गैर कार्यरत महिलाओं के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में विभेद की सार्थकता दर्शाते हैं जो निम्नवत हैं:–

1. महिलाओं के हिन्दी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की हिन्दी विषय में उपलब्धि अधिक होती है।
2. कार्यरत महिलाओं के बच्चों की तुलना में गैर कार्यरत महिलाओं के बच्चों की हिन्दी विषय में उपलब्धि अधिक होती है।
3. महिलाओं के हिन्दी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की गणित विषय में उपलब्धि अधिक होती है।

उपसंहार– इक्कीसवीं सदी का युग ज्ञान का युग है, जिसमें महिलाएं आत्मनिर्भर नारी के रूप में उभर रही है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सफलता के झण्डे को बुलन्द कर रही हैं चाहे वह क्षेत्र शिक्षा का हो, राजनीति का हो, अंतरिक्ष का हो, इंजीनियरिंग का हो, चिकित्सा का हो या अनुसंधान का। आज की महिलायें चाहे वह उच्च आय, मध्यम आय या निम्न आय वर्ग की हों वह शिक्षित हों या कम पढ़ी लिखी हों वह समाज में अपनी एक पहचान बनाना चाहती हैं और घर की चाहरदीवारी से बाहर निकलकर समाज में अपना एक अलग स्थान बना रही हैं। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है और मॉ बालक की प्रथम शिक्षिका है। बालक की शैश्वावस्था मॉ की गोद में ही व्यतीत होता है और वह अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मॉ पर ही निर्भर होता है। यही कारण है कि बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर मॉ का प्रभाव बहुत ज्यादा पड़ता है। महिलाओं के कार्यरत और गैर कार्यरत होने का प्रभाव उनके बच्चों पर पड़ता है और इसके प्रभाव की संभावना तब और भी बढ़ जाती है जब बच्चे प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर हों।

गैर कार्यरत महिलायें अधिकांश समय अपने घर में ही व्यतीत करती हैं जिससे वे अपने बच्चों का पूरा ध्यान रखती है और उनकी अधिगम सम्बन्धी कठिनाईयों को दूर करती हैं जिससे बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना कम हो जाती है, जबकि कार्यरत महिलायें ज्यादातर समय अपने कार्यस्थल पर व्यतीत करती हैं, जिससे वे थकान, मानसिक चिंता तथा घर पर स्थित बालक की विभिन्न समस्याओं को अपने मन में रखती हैं फलस्वरूप वे अपने बालकों की उचित देखभाल और उनकी अधिगम सम्बन्धी कठिनाईयों को दूर करने में असमर्थ रहती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे0सी0, (1986), नई शिक्षा नीति, दिल्ली, प्रभाव प्रकाशन।
2. कपिल एच0के0, (2001), अनुसंधान विधियां, आगरा, भार्गव प्रकाशन।
3. कौल, लोकेश, (2005), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. गुप्ता, एस0पी0 एवं अलका, (2007), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, प्रयागराज, शारदा पुस्तक भवन।
5. चौबे, एस0पी0, (2002), हिस्ट्री आफ इण्डियन एजुकेशन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. पाण्डेय, राम सकल, (2003), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
7. वुच, एम0वी0, (1988–92), फिथ सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च वॉल्यूम–II
8. वेस्ट, जान डबलू, (1972) रिसर्च इन एजुकेशन, न्यूयार्क, प्रेन्टिस हाल इन कारपोरेशन।
9. शर्मा, आर0ए0, (2005), शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर लाल बुक डिपो।

*****